।। ओ३म् ।।

www.aryawartkesari.com

# आर्यावर्त केसरी

आर.एन.आई.सं.
UPHIN/2002/7589
डाक पंजी. सं.
UPMRD Dn-64/2024-26

दयानन्दाब्दः 201
मानव सृष्टि सं. : 1960853125
सृष्टि सं.: 1972949125

विश्व भर में प्राच्य वैदिक संस्कृति तथा भारतीयता का उद्घोषक पाक्षिक

ARYAWART KESARI
Amroha U.P.-244221 India

संरक्षक सहयोग : रू. 5100/- आजीवन : रू.1100/- वार्षिक शुल्क : रू.100/- (विदेश में) 5 वर्ष के लिए 35 डॉलर

वर्ष-23 अंक-14 आश्विन शुक्ल चतुर्दशी से कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी तक संवत 2081 विक्रमी 16 से 31 अक्टूबर 2024 अमरोहा (उ.प्र.) मूल्य : प्रति -5/- पृष्ठ - 8

# विजय दशमी "वीर पर्व" हर्षोल्लास से सम्पन्न

**- दशहरा बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक -राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य**
**- स्वयं की बुराइयों को समाप्त करने की प्रतिज्ञा ले- प्रवीण आर्य**

**आर्यावर्त केसरी ब्यूरो**

**गाज़ियाबाद।** आर्य समाज वृंदावन गार्डन एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में विजय दशमी के उपलक्ष्य में वीर पर्व पर प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता के निर्देशन में व्यायाम की विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं दौड़ का आयोजन किया गया।आर्य वीरों एवं वीरांगनाओं का शोर्य प्रदर्शन डा .राम मनोहर लोहिया पार्क साहिबाबाद में हर्षोल्लास से संपन्न हुआ।कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर हुआ।

केन्द्रीय आर्य आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि दशहरा बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है।इसे वीर पर्व कि संज्ञा दी गई है वेद कहते हैं "वीर भोग्या वसुन्धरा" यानी वीर लोग ही धरती का सुख भोगते हैं।मंदिर में स्थापित मूर्तियां भगवान श्रीकृष्ण, श्रीराम,हनुमान, परशुराम आदि सभी कोई

सुदर्शन चक्र, धनुष,फरसा, तलवार,गदा धारी हैं,शक्ति का संदेश दे रही हैं।कभी आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा है।सत्य की जीत के लिए शक्ति भी होना आवश्यक है।

आर्य गायक मा. विजेन्द्र आर्य एवं पिंकी आर्या के मधुर गीत सुनकर श्रोता झूम उठे।

समारोह में 127 आर्य वीरों एवं वीरांगनाओं ने विजय दशमी वीर पर्व पर दिखाये भव्य शोर्य प्रदर्शन आकर्षण का केन्द्र रहे।प्रतियोगिता में जीते प्रतिभागियों को क्रमशः प्रथम,द्वितीय एवं तृतीय पुरूस्कार के साथ प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए। आर्य समाज के प्रधान कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि हम युवा पीढ़ी उत्साह के लिए रोचक कार्यक्रम करते रहेंगे कार्यक्रम के सूत्रधार एवं संयोजक जिला मंत्री सुरेश आर्य ने मंच का कुशल संचालन किया।

प्रांतीय अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा कि वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति वीरता व शौर्य की उपासक रही है।विजया दशमी केवल एक पर्व ही नही अपितु इसे कई बातों का प्रतीक माना जाता है।दशहरें में रावण के दस सिर इन दस पापों के सूचक माने जाते है काम, क्रोध, लोभ, मोह, हिंसा, आलस्य, झूठ, अहंकार, मद और चोरी। इन सभी पापों से हम किसी न किसी प्रकार से मुक्ति चाहते हैं।समाज में दिनों-दिन बुराइयाँ व असमानताएँ भी रावण के पुतले कि तरह बड़ी होती जा रही है।हमें इन पर्वो को सिर्फ. परंपरा के रूप में नही निभाना चाहिए हमें इन त्योहारों से मिले संकेत और संदेशों को अपने जीवन में भी उतारने का प्रयत्न करना चाहिए।

आर्य नेता प्रमोद चौधरी ने कहा कि यह पर्व हमें संदेश देता है कि ह्लअन्याय और अधर्म का विनाश" तो प्रत्येक स्थिति मे सुनिश्चित है।फिर चाहे आप दुनिया भर की शक्तियों और प्राप्तियों से संपन्न ही क्यो न हों, अगर आपका आचरण सामाजिक गरिमा या किसी भी व्यक्ति विशेष के प्रति गलत होता है तो आपका विनाश भी तय है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्य बंधु देवेन्द्र आर्य ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए विजय दशमी की शुभकामनाएं प्रदान की।उन्होंने कहा कि विजय दशमी के इस पावन पर्व पर हम सबको संकल्प लेना होगा कि देश और समाज की प्रगति के लिए हम अपनी सभी बुराइयों को भी रावण के पुतले के साथ सदा-सदा के लिए दहन कर देंगे और समाज व देश कि उन्नति के लिए कार्य करेंगे। प्रमुख रूप से डा प्रमोद सक्सेना,कृष्ण कुमार आर्य,भूपेंद्र आर्य, रीतम आर्य, जगदीश सैनी,एस सी सिंह,के पी सिंह, रामपाल चौहान, कुमारी साक्षी रावत, आस्था आर्य अवधेश प्रताप सिंह आदि उपस्थित रहे।

# सम्पादकीय

## ईश्वर, जीव (आत्मा) व प्रकृति विषयक आर्यसमाज के सिद्धान्त

*इस लेख में ईश्वर, जीवात्मा तथा प्रकृति विषयक आर्य समाज के सिद्धांतों पर प्रकाश डाला जा रहा है, जो इस प्रकार हैं*

***ईश्वर***

*१) ईश्वर एक है व उसका मुख्य नाम ओ३म् है । अपने विभिन्न गुण-कर्म-स्वभाव के कारण वह अनेक नामों से जाना जाता है ।*

*२) ईश्वर निराकार है अर्थात उसकी कोई मूर्त्ति नहीं है और न बन सकती है, न ही उसका कोई लिङ्ग या निशान है ।*

*३) ईश्वर अनादि, अजन्मा और अमर है । वह न कभी पैदा होता है और न कभी मरता है ।*

*४) ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप है, अर्थात सदैव आनन्दमय रहता है, कभी क्रोधित नहीं होता ।*

*५) जीवों को उसके कमार्नुसार यथायोग्य न्याय देने हेतु वह न्यायकारी कहलाता है । यदि ईश्वर जीवों को उसके कुकर्मों का दण्ड न दे, तो इससे वह अन्यायकारी सिद्ध हो जायेगा ।*

*६) ईश्वर न्यायकारी होने के साथ-साथ दयालु भी है, अर्थात वह जीवों को दण्ड इसलिए देता है कि जिससे जीव अपराध करने से बन्ध होकर दुःखों का भागी न बने, यही ईश्वर की दया है ।*

*७) कण-कण में व्याप्त होने से वह सर्वव्यापक है, अर्थात वह प्रत्येक स्थान पर उपस्थित है ।*

*८) ईश्वर को किसी का भय नहीं होता, इससे वह अभय है ।*

*९) ईश्वर प्रजापति और सर्वरक्षक है ।*

*१०) ईश्वर सदैव पवित्र है अर्थात उसका स्वभाव नित्यशुद्धबुद्धमुक्त है ।*

*११) ईश्वर को अपने कार्यों को करने के लिए किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ता । ईश्वर सर्वशक्तिमान् है अर्थात वह अपने सामर्थ्य से सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और प्रलय करता है । वह अपना कोई भी कार्य अधूरा नहीं छोड़ता ।*

*१२) ईश्वर अवतार नहीं लेता । श्री रामचन्द्र तथा श्री कृष्ण आदि महात्मा थे, ईश्वर के अवतार नहीं।*

*१३) ईश्वर सर्वज्ञ है अर्थात उसके लिए सब काल एक है । भूत, वर्तमान और भविष्यत, यह काल तो मनुष्य के लिए है । ईश्वर तो नित्य है, वह सर्वकालों में उपस्थित है ।*

***जीवात्मा-***

*१) जीवात्मा, ईश्वर से अलग एक चेतन सत्ता है ।*

*२) जीवात्मा अनादि, अजन्मा और अमर है । वह न जन्म लेता है और न ही उसकी मृत्यु होती है ।*

*३) जीवात्मा अनेक है । इनकी शक्ति और ज्ञान में अल्पता होती है ।*

*४) जीवात्मा आकार रहित है, और न ही उसका कोई लिंग है ।*

*५) शरीर के मृत होने की अवस्था में जीवात्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में चला जाता है ।*

*६) जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है । इसके कर्मों का न्याय ईश्वर की न्याय-व्यवस्था में होता है ।*

*७) अगर जीवात्मा अल्पज्ञता से मुक्त होकर सदैव आनन्द की कामना करता है तो उसे शारीरिक इन्द्रियों के माध्यम से ईश्वर की शरण में जाना पड़ेगा, जिसे मोक्ष कहते हैं ।*

***प्रकृति-***

*१) प्रकृति जड़ पदार्थ है । यह सदा से रहनेवाली है और सदा से रहेगी ।*

*२) प्रकृति सर्वव्यापी नहीं है, क्योंकि इस सृष्टि के बाहर ऐसा भी स्थान है, जहां न प्रकृति है न जीव, अपितु केवल ईश्वर ही ईश्वर है ।*

*३) प्रकृति का आधार ईश्वर है । ईश्वर ही प्रकृति का स्वामी है ।*

*४) प्रकृति ज्ञानरहित है। प्रकृति ईश्वर के सहायता के बिना संचालित नहीं हो सकता है ।*

*५) संसार में कोई ऐसी चीज नहीं जिसको जादू कह सकते हैं । सब चीज नियम से होती है । प्रकृति की भी सभी चीजें सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि नियम से चलती है । नियम बदलते नहीं, सदा एक से रहते हैं।*

**वेद वाणी**

**हमारा जीवन व्रतमय, प्रेममय और त्याग मय हो!**
**(ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयति विद्वान्! अर्यमा देवैः सजोषाः!)**
साम २१८- ५

व्याख्या इस द्वन्द्वात्मक संसार में मनुष्य दो प्रकार के मार्गो से चल रहें हैं! एक मार्ग सरलता का मार्ग है और दूसरा कुटिलता का! कैवल्योपनिषद् के अनुसार

सर्वं जिँ मृत्यु पदं, आजर्वं

ब्रह्मणः पदम् कुटिलता मृत्यु का मार्ग है, और सरलता मोक्ष का! इस सरल मार्ग का संकेत ही प्रस्तुत मन्त्र में उपलभ्य है! गत मन्त्र में मेधातिथि ब्रह्म के कीर्तन से जीवन यापन कररहे थे! जो व्यक्ति ब्रह्मस्मरण के साथ क्रियाशील बनता है! वह सरल मार्ग से ही गति करता है, अतः मन्त्र कहते हैं कि नः वरुणःमित्रः अर्यमा ऋजुनीती नयति

हमें वरुण मित्र और अर्यमा सरल मार्ग से ले चलते हैं! वस्तुतः सरलता का मार्ग यह है कि वरुण, मित्र व अर्यमा के सिद्धांतों को जीवन का सूत्र बनाना! वरूण, पानी व व्रतों के बंधन में अपने को बांधने की देवता है! यही सब

वैयक्तिक उन्नतियों का मूलाधार है! मित्र स्नेह की देवता है! प्राणी मात्र से स्नेह करना, सभी में एकत्व देखना, यह विश्व प्रेम उन्नतियों का आधार है

अर्यमा - दान की देवता है! हमारा जीवन दानशील हो! वरुण, मित्र, अर्यमा ये तीन देवता ही त्रिविध उन्नति का मूल बनकर हमारे जीवन को दिव्य बनाते हैं! इन तीनों का विशेषण *विद्वान दिया गया है! विद्वान का अर्थ है समझदार! हमें व्रतों का ग्रहण समझदारी के साथ करना है! मूर्खता से हम शरीर को पीड़ित करते हुए व्रत लेते हैं! और हानि उठाते हैं! मूर्खता से अपात्र को दान देकर हम तामसी दानी बनते हैं! और मूर्खता से स्नेह करते हुए ममत्व में फंसते जाते हैं! हमारे तीनों देवता विद्वान हो अर्थात हम तीनों सिद्धांतों को समझदारी से जीवन में स्थान दे!

ये जीवन के तीनों सिद्धांत देवैःसजोषाः दिव्य गुणों के साथ समान रुप से प्रीति करते हुए हमारे कल्याण के साधक होते हैं! हम केवल व्रती न बनें, केवल दानी न बनें और केवल प्रेम करने वाले न बने! हमारे जीवन में तीन सिद्धांत सम्मिलित रुप से चलें! ऐसा होने पर इस मंत्र के ऋषि गोतम प्रशस्त इन्द्रियों वाले बनें तभी हम राहूगण त्यागशीलों में गिनती के योग्य समझे जायेंगे!

मन्त्र का भाव है कि- हम सरलता के ऋजु मार्ग पर चलकर व्रत करने वाले, प्रेम युक्त, और त्यागशील बनें

**सुप्रभात सुमन भल्ला**

# आर्य कौन हैं और इनका मूलस्थान?

मनुष्य श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव को ग्रहण करने से बनता है। विश्व में अनेक मत, सम्प्रदाय आदि हैं। इन मतों के अनुयायी हिन्दू, ईसाई, मुसलमान, आर्य, बौद्ध, जैन, सिख, यहूदी आदि अनेक नामों से जाने जाते हैं। मनुष्य जाति को अंग्रेजी में भ्नउंद कहा जाता है। यह जितने मत व सम्प्रदायों के लोग हैं यह आकृति व शरीर तथा इसके अंगों व इन्द्रियों की दृष्टि से सब समान हैं। इनको अनेक मतों में विभाजित करने की क्या कोई आवश्यकता थी? यह एक गम्भीर प्रश्न है। इन मतों का आरम्भ उन-उन देशों में अज्ञानता, अन्धविश्वासों व मिथ्या परम्पराओं को दूर करने की दृष्टि से किया गया था। मनुष्य अल्पज्ञ होता है। वह ज्ञान व शक्ति की दृष्टि से पूर्ण समर्थ नहीं हो सकता। पूर्ण समर्थ तो केवल सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ तथा सवार्धार सत्य-चित्-आनन्दस्वरूप परमात्मा ही होता है। मनुष्य जाति का यदि कोई एक नाम रखना तो तो वह गुणों व अवगुणों के नाम पर रखा जाना चाहिये। हमारे पूर्वज विश्व में बुद्धि और ज्ञान की दृष्टि से श्रेष्ठ व सर्वोत्तम थे। उन्होंने इसी सिद्धान्त को अपनाया और मनुष्य को गुण, कर्म व स्वभाव के आधार पर मुख्यतः दो नामों आर्य व अनार्य से प्रस्तुत किया। श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव वाले मनुष्यों को आर्य तथा गुणहीन और दुष्कर्म करने वालों को अनार्य नाम से सम्बोधित किया जाता था। आर्य नाम हिन्दू, मुस्लिम, सिख व ईसाई की भांति कोई मत के आधार पर दिया गया नाम नहीं है अपितु आर्य का एक गौरवपूर्ण अर्थयुक्त होता है जिसको सत्य सिद्ध करने व धारण करने से मनुष्य आर्य बनता है।

हमारे देश में आदिम वा आदि चार ऋषियों को सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी ईश्वर से चार वेदों का ज्ञान मिला था। इन्हीं ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ने अन्य ऋषि ब्रह्मा जी को इन चार वेदों का ज्ञान दिया और इन सबने अन्य सभी मनुष्यों में वेद ज्ञान का प्रकाश किया। महाभारत काल तक भारत व विश्व के अनेक देशों में ऋषि परम्परा चली। भारत के यह ऋषि वेद धर्म प्रचार के लिये विश्व के अनेक देशों यहां तक कि अमेरिका जिसे पाताल देश कहा जाता है, जाया करते थे। महाभारत युद्ध में हुए विनाश से समूचे देश-देशान्तर में अव्यवस्था फैल गई जिस कारण अध्ययन-अध्यापन की सुविधा न होने से ऋषि परम्परा बन्द हो गई। ऋषि दयानन्द ने अपने अपूर्व पुरुषार्थ से वेदों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया और ऋषियों की तरह उसका देश-देशान्तर में प्रचार किया। उन्होंने जो बातें कहीं है वह केवल पुस्तकों में पढ़कर नहीं अपितु पुस्तकों की उन मान्यताओं को बुद्धि व तर्क पर आधारित बनाकर स्वीकार किया और केवल सत्य मान्यताओं का ही देश व समाज में प्रचार किया। उन्होंने अपनी तर्कणा शक्ति से सत्य के स्वरूप का साक्षात् किया था। अज्ञान व अन्धविश्वासों से रहित उस अन्वेषित तथा विवेचित सत्य का उन्होंने निर्भीकतापूर्वक देश भर में प्रचार किया। अंग्रेजी राज्य होने पर भी अपने जीवन को जोखिम में डालकर वह देश के अनेक भागों में गये और बिना अंगरक्षकों के वेदों का प्रचार करते रहे। उन्होंने सिद्ध किया था कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और इसकी सभी मान्यतायें सत्य एवं तर्कपूर्ण हैं। वेदों के प्रचार के लिये उन्होंने विपक्षी विधर्मियों से शास्त्रार्थ भी किये थे और सबको अपने ज्ञान व तर्कों से प्रभावित किया था। वह धर्म विषयक ज्ञान के अजेय योद्धा थे। इसका प्रमाण उनका ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश है। इस ग्रन्थ में उन्होंने सभी मत-मतान्तरों की समीक्षा करने के साथ आरम्भ के दस अध्यायों में तर्क व बुद्धिगम्य वैदिक धर्म का सत्य

स्वरूप प्रस्तुत किया है। अद्यावधि उनकी वैदिक मान्यतायें अखण्डीय बनी हुई हैं जबकि सभी मतों की एक व दो नहीं अपितु अनेक मान्यताओं को उन्होंने तर्क की कसौटी पर कस कर अविद्यायुक्त, असत्य व अप्रमाणिक सिद्ध किया था।

ऋषि दयानन्द ने वेदों के सत्य ज्ञान व मान्यताओं के आधार पर आर्यह्व शब्द पर भी अपने मन्तव्यों को अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश तथा आर्योद्देश्यरत्नमाला में प्रस्तुत किया है। आर्योद्देश्यरत्नमाला में वह आर्य शब्द का उल्लेख कर इसका स्वरूप व परिभाषा देते हुए कहते हैं कि जो श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्यविद्यादि गुणयुक्त और आर्यावर्त देश में सब दिन से रहने वाले हैं, उनको आर्य कहते हैं। आर्यावर्त देश के विषय में उन्होंने बताया है कि हिमालय, विन्ध्याचल, सिन्धु नदी और ब्रह्मपुत्रा नदी, इन चारों के बीच और जहां तक इनका विस्तार है, उनके मध्य में जो देश है, उसका नाम आर्यावर्त देश है।

ऋषि दयानन्द ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के अन्त में अपने मन्तव्यों को सूचीबद्ध किया है। अपने स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में आर्य शब्द के विषय में वह लिखते हैं जैसे आर्य श्रेष्ठ और दस्यु दुष्ट को कहते हैं वैसे मैं भी मानता हूं। अपने मन्तव्यों में आर्यावर्त की भी उन्होंने वही परिभाषा दी है जो आर्योद्देश्यरत्नमाला में दी है। यहां कुछ शब्दों में भिन्नता है परन्तु आशय वही है और इस परिभाषा से आर्यावर्त की परिभाषा अधिक स्पष्ट होती है। वह लिखते हैं आर्यावर्त देश इस भूमि का नाम इसलिये है कि इस में आदि सृष्टि (मानव सृष्टि के आरम) से आर्य लोग निवास करते हैं परन्तु इस की अवधि उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पश्चिम में अटक और पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी है। इन चारों के बीच में जितना प्रदेश है उस को आर्यावर्त कहते है और जो इस में सदा रहते हैं उन को भी आर्य कहते हैं।

ऋषि दयानन्द के उपर्युक्त विचार प्रमाणों से पुष्ट हैं। हमारे देश में आठवीं शताब्दी में विदेशी मांस मदिरा भक्षी लोग आये और यहां छल, बल व अन्याय से हिन्दुओं को पीड़ित किया। हिन्दू जनता अन्धविश्वासों एवं अविद्या से ग्रस्त थी। इनका विद्या को प्राप्त न होने से पतन हुआ। इस पर भी इनमें कोई ऐसा महापुरुष नहीं हुआ जो इनकी अविद्या व अन्धविश्वासों को दूर करके इन्हें संगठित करता। सबने अपने अपने मत व वाद चलाये और मृत्यु का ग्रास बन गये। सौभाग्य से उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। वह विद्या निपुण थे। उनके समय में विद्यमान धमार्चार्यों व मत-मतान्तरों की दृष्टि से वह वेद, विद्या व धर्मज्ञान की दृष्टि से सूर्य के समान थे। वह आदर्श बाल ब्रह्मचारी थे और वेदों के मर्मज्ञ विद्वान थे। उन्हें भारत का यथार्थ इतिहास विदित था। उनसे ही पता चला कि हमारे रामायण और महाभारत ग्रन्थों को हमारे ही कुछ पण्डितों ने प्रक्षेप कर भ्रष्ट कर दिया है। दस-बीस हजार श्लोकों का भारत प्रक्षिप्त होकर एक लाख से अधिक श्लोकों का बना दिया गया। 18 पुराणों की भी उन्होंने परीक्षा की और उन्हें अन्धविश्वासों से युक्त अविश्वसीय काल्पनिक कथाओं तथा अश्लील प्रसंगों का भण्डार बताया। उन्होंने पुराणों को त्याज्य कोटि के ग्रन्थ बताया। वह वेद, उपनिषद, दर्शन, प्रक्षेप रहित विशुद्ध मनुस्मृति आदि ग्रन्थों को धर्म के आचरण व पालन के लिये उपयोगी मानते थे और इसी का उन्होंने प्रचार किया। सत्यार्थप्रकाश में उन्होंने मान्य ग्रन्थों की सूची भी प्रस्तुत की है। उनके कार्यों से अन्धविश्वास व अविद्या के कुछ बादल झंटे परन्तु हिन्दू जाति में अविद्या का संस्कार इतना गहन व प्रबल है कि सभी लोग ऋषि दयानन्द की अमृत के समान अमोघ औषधि विद्याह्व को स्वीकार कर उससे लाभान्वित नहीं हुए। इसे विधि की विडम्बना ही कह सकते हैं। मुस्लिम शासन काल में भी हमारे यशस्वी योद्धाओं वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्द सिंह, महाराजा रणजीत सिंह आदि ने शत्रुओं से लोहा लिया और अपने राज्यों को स्वतन्त्र रखते हुए उनका शासन व संचालन किया था।

दिल्ली में मुस्लिम शासन के पतन के बाद अंग्रेजों ने छल व बल से देश पर कब्जा किया और यहां कि वैदिक संस्कृति को कुचलने के लिये कुछ मिथ्या वाद प्रस्तुत किये जिनमें से एक यह है कि आर्य भारत के मूल निवासी नहीं अपितु यह बाहर, ईरान आदि स्थान, से आये थे। इन अंग्रेजों व इनके समर्थक बुद्धिजीवियों ने अपनी मान्यता के समर्थन में कोई पुष्ट प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया लेकिन अपनी चोरी और सीना जोरी से इसे मनवा लिया क्योंकि शासन इनका था। इस विषय की सच्चाई जानने के लिये सच्चे जिज्ञासुओं को स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी की प्रसिद्ध पुस्तक आर्यों का आदि देश और उनकी सभ्यता को पढ़ना चाहिये। आर्य ही भारत के मूल निवासी एवं आदिवासी हैं। आर्यों का उदय भारत में ही हुआ था। आर्य ही विद्या से विमुख होने से अनार्य, द्रविण व अन्यों देश में जाकर कालान्तर में ईसाई, यहूदी व अन्य मतों के अनुयायी बनें। प्रो. मैक्समूलर यह स्वीकार करते हैं कि उनके पूर्वज पूरब से पश्चिमी देशों में गये थे।

सत्य सत्य होता है जो अपना प्रभाव दिखाता है। वेद संसार की प्रथम पुस्तक है। वेद में आर्य शब्द का प्रयोग है जिसका अर्थ कोई जाति नहीं अपितु श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव वाला मनुष्य होता है। वेद के बाद ऋषियों द्वारा ब्राह्मण, मनुस्मृति, उपनिषद तथा दर्शन ग्रन्थों की रचनायें हुईं। इनमें से किसी ग्रन्थ में आर्यों के आर्यावर्त व भारत से बाहर कहीं और किसी मूल स्थान का वर्णन नहीं है। दूसरे आदिवासी कहे जाने वाले लोगों के किसी प्राचीन ग्रन्थ में आर्य व द्राविणों के युद्ध का वर्णन नहीं है न ही आर्यों के ग्रन्थों में है। ऐसी स्थिति में यही कहना व मानना उचित होगा कि अंग्रेजों ने भारतीयों को देश की आजादी से विमुख करने के लिए स्वार्थवश आर्यों के भारत से बाहर से आने का असत्य मत प्रचारित किया था। भारत अर्थात आर्यावर्त ही आर्यों वा हिन्दुओं का मूल देश है। आर्य जाति सूचक शब्द नहीं है। आर्य का यदि अंग्रेजी में अनुवाद करें तो इसका एक अर्थ जेन्टलमैन अर्थात सदाचारी मनुष्य हो सकता है। अतः संसार के वह सभी लोग आर्य हैं जो सच्चे ईश्वरभक्त आस्तिक हैं, ज्ञानी हैं, सदाचारी हैं, निष्पक्ष, सच्चे धार्मिक एवं देशभक्त है, अहिंसक प्रवृत्ति के हैं, सभी मूक व अहिंसक पशुओं के प्रति दया करने वाले हैं तथा वेद की शिक्षाओं के अनुसार चलने वाले हैं। हमारा इस लेख को लिखने का मात्र यही उद्देश्य था कि सभी देशवासी आर्य शब्द का सत्य अर्थ जान सकें और विदेशियों तथा भारत के छद्म सेकुलरों द्वारा चलाये गये मिथ्या वाद व मान्यता की सत्यता को जान सकें। लेख को विराम देने से पूर्व यह भी बता दें सृष्टि की आदि में मानव की उत्पत्ति वर्तमान के तिब्बत प्रदेश में हुई थी। सृष्टि के आरम्भ इन्हें ही परमात्मा व उसके बाद ऋषियों से चार वेदों का ज्ञान प्राप्त हुआ था। यह सब लोग आर्य थे। उन दिनों संसार के अन्य किसी स्थान पर मानव सृष्टि नहीं हुई थी। तिब्बत में जब रहने वाले कुछ आर्यों में विचार मतभेद आदि होने से विवाद हुए तब इनमें से कुछ लोग विश्व के सुदूर प्रदेशों में अपने वायुयानों से जाकर बस गये थे। ऋषि दयानन्द की पुस्तक उपदेशमंजरी में इसका उल्लेख हुआ है। समय के साथ अनेक परिवर्तन हुए। इन्हीं में एक एक यह परिवर्तन है कि महाभारत के बाद आर्यावर्त से बाहर रहने वाले लोग वैदिक ज्ञान के प्रचार की समुचित व्यवस्था न होने से धर्म व मत की दृष्टि से वैदिक मत से इतर अन्य मतों के अनुयायी व आग्रही हो गये।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

# हर पल देख रहा है ईश्वर : रूप

**आर्यावर्त केसरी ब्यूरो**

**बिल्सी**, तहसील क्षेत्र के यज्ञ तीर्थ गुधनी में स्थित प्रज्ञा आर्य मंदिर में आर्य समाज का साप्ताहिक सत्संग आयोजित किया गया ! यज्ञ सत्संग में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पधारे । इस अवसर पर सुप्रसिद्ध समाज सुधारक आचार्य संजीव रूप ने कहा "भगवान का भजन 24 घंटा करने से ही मोक्ष प्राप्ति होगी ! इसका अर्थ यह नहीं कि आप सब काम छोड़कर के किसी वन में जाकर या मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे में जाकर बैठ जाएं ! 24 घंटे भजन का मतलब है सब काम करते हुए ईश्वर का ध्यान रखना ! एक बात स्पष्ट है कि सृष्टि बनाने वाला वह ईश्वर हमारे सदा साथ रहता है और हर पल हमें देखता है यदि हम यह विश्वास रखें कि ईश्वर हमें हर पल देख रहा है और हमारे अच्छे बुरे कर्मों का सुख-दुख रूप

फल हमें अवश्य देगा, तो यही ईश्वर की भक्ति होगी और इसी से जीवन का उद्धार होगा । अतः हमें चाहिए कि सोते जागते उठते बैठते आते जाते खाते खिलाते लेते-देते व्यापार करते, नौकरी करते सारे काम करते हुए इस बात का ध्यान रखें कि परमात्मा का संविधान हमारे साथ है और वह हमें छोड़ने वाला नहीं है ! कुमारी तृप्ति शास्त्री ने कहा "हिंदू धर्म सबसे सुंदर धर्म है यहां सबको अपने ढंग से जीने का अधिकार है ! स्त्री पुरुष को बराबर का अधिकार है किंतु कुछ लोगों ने छुआछूत जातिवाद आदि फैला कर धर्म को मैला किया है, हमें इनसे सावधान रहना चाहिए । कुमारी इशा आर्य ने भजन गाया ।मास्टर साहब सिंह , राकेश आर्य, विचित्रपाल सिंह, पंजाब सिंह, श्रीमती संतोष कुमारी, सुखबीर सिंह, मिथिलेश रानी, रेखा रानी आदि मौजूद रहे ।

## 27 अक्टूबर को होगी विशाल सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

**(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)**

**आगरा।** सामान्य ज्ञान के महत्व को ध्यान में रखते हुए महर्षि दयानन्द योगपीठ द्वारा रविवार कार्तिक कृष्णपक्ष एकादशी संवत 2081 तदनुसार 27 अक्टूबर 2024 को समय दोपहर 12ः 00 बजे से 01ः 30 तक विशाल सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम और प्रतियोगिता की किसी भी जानकारी के लिए मो.नंबर- 9897060822 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

यह जानकारी महर्षि दयानन्द योगपीठ न्यास की ओर से आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री, संचालक द्वारा दी गई है।

# स्व० श्री लालूराम आर्य आईतान की पुण्य स्मृति हवन यज्ञ का आयोजन

**आर्यावर्त केसरी ब्यूरो**

**हिसार।** महाशय दल्लुराम आर्य जी व उनके तत्कालीन सहयोगियों द्वारा सन 1934 में संस्थापित आर्य समाज आर्यनगर, जिला- हिसार (हरियाणा) में स्व० श्री लालूराम आर्य आईतान की पूण्य स्मृति उनके सुपुत्रों द्वारा बनवाई गई यज्ञशाला में नियमित रुप से साप्ताहिक हवन करते हुए। पुरोहित के रुप में चि० निलेश आर्य व श्री सीताराम आर्य विधिवत ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ व बलिवैश्वदेव यज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञमान के आसन पर आयु० दीक्षा आर्या ने सब जनों के साथ यज्ञ में घी की आहुतियां प्रदान की। सबने मिल कर यज्ञ प्रार्थना के साथ विधिवत यज्ञ सम्पन्न किया । आज के बच्चे कल के देश का भविष्य विषय को लेकर श्री सीताराम आर्य ने सार गर्भित उपदेश किया । समापन पर सबने यज्ञ शेष का आनंद लिया।आचार्या बहन डा० सुकामा आर्या जी ने सबके लिए विशेष प्रसाद की व्यवस्था की ।

## विश्व शान्ति गायत्री मिशन ने रतन टाटा के निधन पर जताया शोक

**आर्यावर्त केसरी ब्यूरो**

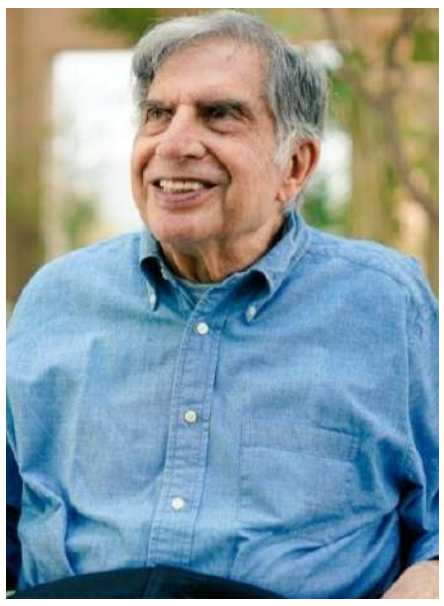

**चण्डीगढ़ ।** विश्व शान्ति गायत्री मिशन (ट्रस्ट) रजि० चण्डीगढ़ ने भारत के उद्योग पति रतन टाटा के निधन पर गहरा शोक जताया है । विश्व शान्ति गायत्री मिशन परिवार की ओर से राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य सुफल ने रतन टाटा के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी क्षति पूर्ति हो पाना बहुत कठिन है । श्रद्धेय आचार्य श्री ने परम पिता परमात्मा से उनकी पुण्य आत्मा की शान्ति एवं सदगति के लिए प्रार्थना की है ।

# आचार्य सुफल के अनुज विजयपाल शास्त्री ने किया विनोद भयाना को सम्मानित

**आर्यावर्त केसरी ब्यूरो**

**चण्डीगढ़।** सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य सुफल (हांसी) के अनुज विजयपाल शास्त्री ने हांसी विधानसभा सभा क्षेत्र से तीसरी बार विधायक बने माननीय विनोद भयाना को गुलदस्ता भेंट कर सम्मानित किया । हांसी के नव निर्वाचित विधायक भयाना साहब ने मुंह मीठा करवाकर स्वागत करते हुए कहा कि हमें शहीदों की वजह से वोट का अधिकार मिला है । आज मैं आजाद भारत में विधायक या जो कुछ भी हूं वह सब भारत माता के लाडले अमर शहीदों की वजह से ही हूं ?। उल्लेखनीय है कि श्रद्धेय आचार्य श्री ने भाई साहब विनोद भयाना को विधायक बनते ही हरियाणा की नई भाजपा सरकार में मन्त्री बनने की अग्रिम बधाई दे दी थी । जिसे मीडिया ने सराहते हुए सहर्ष प्रकाशित किया । और वे अब भाजपा सरकार में मन्त्री बनेंगे । आचार्य श्री के अनुज वन्धु विजय शास्त्री ने चुनाव में भाई साहब विनोद भयाना का कन्धे से कन्धा मिलाकर प्रचार कार्य में साथ दिया । ताकि सनातन वैदिक संस्कृति को और भी बढ़ावा मिल सके । हांसी के शास्त्री भवन परिवार का भयाना परिवार के साथ कोई राजनीतिक ही नहीं अपितु पारिवारिक एवं सामाजिक मधुर सम्बन्ध पूज्य पिता स्वर्गीय श्री महेश चन्द्र भयाना के समय से ही चला आ रहा है । विधायक महोदय के अनुज नरेन्द्र भयाना के साथ आचार्य प्रवर सुफल शास्त्री (हांसी) का विशेष स्नेहिल सम्बन्ध है ।

## डीएवी हांसी ने मनाया महात्मा आनन्द स्वामी का जन्मदिवस

**आर्यावर्त केसरी ब्यूरो**

**हांसी।** डी ए वी एम ए एस स्कूल, हांसी ने महात्मा आनंद स्वामी का जन्मदिवस बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया । जिसमें सर्वप्रथम हवन यज्ञ किया गया । यज्ञ-हवन के ब्रह्मा पंडित विजयपाल शास्त्री ने हवन कराया । यज्ञ की यज्ञमाना प्रिंसिपल शैलजा राणा थी । शिक्षक वृन्द व विद्यार्थीगण सभी ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया । विजय पाल शास्त्री ने महात्मा आंनद स्वामी के जीवन के बारे में बताया । कक्षा दसवीं की छात्राओं ने सबका तिलक लगाकर स्वागत सम्मान किया । इस अवसर पर विद्यालय की मुख्यआध्यापिका शैलजा राणा, गीता रानी, कीमत पाटिल, अंजू सैनी, सुमन वधवा, पूनम, प्रिया, निशा, सोनिया, सुनीता सैनी आदि मौजूद रहे ।

## ईसाई मत छोड़कर वैदिक धर्म अपनाने वाली सविता देवी को आचार्य सुफल ने दयानन्द जी का कैलेण्डर भेंट कर किया सम्मानित

**आर्यावर्त केसरी ब्यूरो**

**पिन्जौर।** आर्य समाज पिन्जौर की पवित्र यज्ञशाला में समाज सेविका श्रीमती अमिता पंवार धर्मजागरण अम्बाला विभाग संयोजिका की प्रेरणा से आर्य समाज पिन्जौर के प्रधान आर्य पुनीत देशवाल के निर्देशन एवं आर्य समाज पिन्जौर के पूर्व प्रधान आर्य रोहतास दहिया की गरिमामय उपस्थिति में श्रीमती सविता देवी धर्म पत्नी जयभगवान दास ने अपने परिवार बच्चों विनोद कुमार व सुनीता कुमारी सहित यज्ञ-हवन में यज्ञमान के आसन को सुशोभित करते हुए अग्नि को साक्षी मानकर राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री सुफल के ब्रह्मत्व एवं भजन गायक मास्टर देवेन्द्र शास्त्री के पौरोहित्य में अपनी स्वेच्छा से ईसाई मत को छोड़कर सहर्ष वैदिक सनातन ( हिन्दू ) धर्म को अपनाया । आचार्य प्रवर सुफल ने यज्ञ-हवन की महिमा का गुणगान करते हुए प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ-हवन करने की प्रेरणा दी । यज्ञोपरान्त श्रद्धेय आचार्य श्री सुफल ने सविता देवी को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज का चित्र एक कैलेण्डर भेंट कर सम्मानित किया । इस अवसर पर आर्य समाज पिन्जौर के प्रचार मन्त्री रामकुमार आर्य बोहर,शीतल,बवीता , ममता, अश्विनी शर्मा,रुपम सिंह, सुमित्रा, सूर्यकान्त गौतम एडवोकेट हाई कोर्ट चण्डीगढ़, अनीता त्रिपाठी, सविता देवी, , सुनीता विनोद आदि अनेक नर नारी उपस्थित थे ।

**आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा**
(आर्ष वैदिक साहित्य एवं राष्ट्र चेतना संबंध साहित्य के प्रकाशक)

## प्रकाशित पुस्तकों की सूची:

अर्चना यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 20
आर्य पर्व पद्धति ..... मूल्य रू. 25
यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 35
आर्य समाज बुला रहा है ..... मूल्य रू. 6
कर्मफल रहस्य ..... मूल्य रू. 10
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की विचारधारा ..... मूल्य रू. 5
सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़े ..... मूल्य रू. 2
महर्षि दयानंद के जीवन के विविध प्रसंग मूल्य रू. 20
नीति शतक भाग-1, भाग-2----------(प्रत्येक का मूल्य रू. 20)
वैदिक सिद्धांत विमर्श ..... मूल्य रू. 25
भजन माला ..... मूल्य रू. 20
आर्योद्देश्यरत्नमाला ..... मूल्य रू. 8
महर्षि दयानंद की विशेषताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
अंत्येष्टि संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 8
आर्य कन्या की सूझबूझ ..... मूल्य रू. 8
दयानंद लघु ग्रंथ संग्रह ..... मूल्य रू. 60
संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 80
दयानंद सुविचार धन ..... मूल्य रू. 70
कथा सरोवर ..... मूल्य रू. 50
मानव कल्याण निधि ..... मूल्य रू. 100
सत्यार्थ प्रकाश बिना जिल्द (छोटा) मूल्य रू. 80
सत्यार्थ प्रकाश सजिल्द (बड़ा) .. मूल्य रू. 250
प्रखर राष्ट्रचेता महर्षि दयानंद ....प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विरजानंद
प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी श्रद्धानंद ..प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी दर्शनानंद
प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा हंसराज ..प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा लेखराम
प्रखर राष्ट्रचेता गुरुदत्त विद्यार्थी .प्रखर राष्ट्रचेता लाला लाजपत राय
प्रखर राष्ट्रचेता पं. रामप्रसाद बिस्मिल .प्रखर राष्ट्रचेता सरदार भगत सिंह
प्रखर राष्ट्रचेता डॉक्टर हेडगेवार .प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विवेकानंद
प्रखर राष्ट्रचेता सरदार पटेल ....प्रखर राष्ट्रचेता प्रकाशवीर शास्त्री
प्रखर राष्ट्रचेता डॉ. भीमराव अंबेडकर
प्रखर राष्ट्रचेता पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी प्रखर राष्ट्रचेता पं. दीनदयाल उपाध्याय
(ऐसे ही अन्य अनेक महापुरुषों के संक्षिप्त जीवन चरित्र/ प्रत्येक का मूल्य रू.10/)
अग्निहोत्र लैमिनेटेड फोल्डर मूल्य रू.10 ब्रह्म यज्ञ (संध्या) लैमिनेटेड फोल्डर रू. 6
महिला क्रांति गीत ..... मूल्य रू. 80
रंग बदलती दुनिया ..... मूल्य रू. 50
योग यौवन और प्रकृति पर्यावरण .. रू. 100
चतुर्वेद भाष्य .....संस्कार विधि
मनु स्मृति .....गौ करुणानिधि
यज्ञ और पर्यावरण .....बंदा बैरागी
दयानंद सप्तक
हिंदी के प्रचार प्रसार में आर्य समाज की भूमिका
रामायण का वास्तविक स्वरूप
यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा सामवेद
(कवि वीरेंद्र राजपूत कृत काव्यार्थ)
लाला लाजपत राय समग्र
स्वामी श्रद्धानंद समग्र
जन जागरण भाग 2 ..... मूल्य रू. 70

**आदि सहित आर्यावर्त प्रकाशन एवं देश के प्रमुख प्रकाशनों के साहित्य बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। समस्त साहित्य पर विशेष छूट उपलब्ध है कृपया आज ही साहित्य खरीदें और पाएं विशेष छूट।**

**संपर्क सूत्र : 94121 39333, 87552 68578**

# श्री रतन टाटा के जीवन की सबसे बड़ी खुशी

**विनम्र श्रद्धांजलि देश के सच्चे भारत रत्न स्वर्गीय श्री रतन टाटा जी को**

"मैं आपका चेहरा याद रखना चाहता हूं ताकि जब मैं आपसे स्वर्ग में मिलूं, तो मैं आपको पहचान सकूं और एक बार फिर आपका धन्यवाद कर सकूं।"

यह वाक्य रतन टाटा के जीवन का वह क्षण था, जिसने उन्हें सच्चे सुख का अर्थ समझाया। जब एक टेलीफोन साक्षात्कार में भारतीय अरबपति श्री रतन टाटा से रेडियो प्रस्तोता ने पूछा, "सर, आपको जीवन में सबसे अधिक खुशी कब मिली?" तब उन्होंने एक मार्मिक जवाब दिया।

**जीवन के चार चरणों में खुशी की तलाश**

रतन टाटा ने कहा, "मैंने जीवन में चार चरणों से गुजरा और अंततः मुझे सच्चे सुख का अर्थ समझ में आया।" पहला चरण धन और साधन संचय करने का था। इस दौरान, मुझे वह खुशी नहीं मिली, जिसकी मुझे उम्मीद थी। फिर दूसरा चरण आया, जब मैंने कीमती सामान और वस्त्रों को इकट्ठा करना शुरू किया। लेकिन मुझे जल्द ही यह एहसास हुआ कि इस सुख का प्रभाव भी अस्थायी है, क्योंकि इन वस्तुओं की चमक ज्यादा देर तक नहीं रहती। तीसरा चरण तब आया जब मैंने बड़े-बड़े प्रोजेक्ट हासिल किए। उस समय मेरे पास भारत और अफ्रीका में डीजल की आपूर्ति का 95% हिस्सा था, और मैं भारत और एशिया में सबसे बड़े इस्पात कारखाने का मालिक था। फिर भी, मुझे वह खुशी नहीं मिली, जिसकी मैंने कल्पना की थी।

**चौथा और निर्णायक चरण**

फिर चौथा चरण आया, जिसने मेरे जीवन की दिशा बदल दी। मेरे एक मित्र ने मुझे विकलांग बच्चों के लिए व्हीलचेयर खरीदने के लिए कहा। करीब 200 बच्चे थे। मैंने अपने दोस्त के अनुरोध पर तुरन्त व्हीलचेयर खरीदीं। लेकिन मेरे मित्र ने आग्रह किया कि मैं उनके साथ जाकर खुद उन बच्चों को व्हीलचेयर भेंट करूं। मैंने बच्चों को अपनी हाथों से व्हीलचेयर दीं और उनकी आंखों में जो खुशी की चमक देखी, वह मेरे जीवन में एक नया एहसास लेकर आई। उन बच्चों को व्हीलचेयर पर घूमते और मस्ती करते देखना ऐसा था, मानो वे किसी पिकनिक स्पॉट पर हों और किसी बड़े उपहार का आनन्द ले रहे हों।

**जीवन बदल देने वाला पल**

जब मैं वापस जाने की तैयारी कर रहा था, तभी एक बच्चे ने मेरी टांग पकड़ ली। मैंने धीरे से पैर छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन उसने और जोर से पकड़ लिया।तब मैं झुककर उससे पूछा, "क्या तुम्हें कुछ और चाहिए?" उस बच्चे का जवाब जीवन बदलने वाला था। उसने कहा, "मैं आपका चेहरा याद रखना चाहता हूं ताकि जब मैं आपसे स्वर्ग में मिलूं, तो मैं आपको पहचान सकूं और एक बार फिर आपका धन्यवाद कर सकूं।"

**सच्चे सुख का अर्थ**

इस एक वाक्य ने न केवल रतन टाटा को झकझोर दिया, बल्कि उनके जीवन के प्रति दृष्टिकोण को पूरी तरह से बदल दिया। यह अनुभव उन्हें समझा गया कि सच्ची खुशी दूसरों की सेवा में है, न कि भौतिक संपत्तियों में।

**जीवन का मर्म**

इस कहानी का मर्म यह है-- कि हमें यह सोचने की आवश्यकता है कि जब हम इस संसार को छोड़ेंगे, तो हमें किस लिए याद किया जाएगा। क्या हमारा जीवन किसी के लिए इतना महत्वपूर्ण होगा कि वह हमें फिर से देखना चाहे? यही सबसे बड़ा सवाल है, जो हमें अपने जीवन के सच्चे उद्देश्य पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

**रतन टाटा: 25 वर्ष से 87 वर्ष तक का सफर**

रतन टाटा ने अपने जीवन के इस सफर में, 25 वर्ष से 87 वर्ष तक, आखिरकार सच्चे सुख का अर्थ समझा, जो निस्वार्थ सेवा में निहित है।

# नवरात्र आए हैं शक्ति का संदेश लाए हैं : आचार्य संजीव रूप

**आर्यावर्त केसरी ब्यूरो**

**बिल्सी,** तहसील क्षेत्र के यज्ञ तीर्थ गुधनी ग्राम में स्थित प्रज्ञा यज्ञ मंदिर में आर्य समाज का साप्ताहिक सत्संग आयोजित किया गया ! इस अवसर पर विश्व शांति राष्ट्र कल्याण की भावना के साथ यज्ञ किया गया । यज्ञ के उपरांत सत्संग हुआ ! सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य संजीव रूप ने ने कहा "नवरात्र आए हुए हैं , यह शक्ति का संदेश लाए हुए हैं, ! बिना शक्ति के कभी सुख नहीं होता ! ज्ञान भी शक्ति के बिना व्यर्थ है ! जैसे किसी व्यक्ति को बुखार आ जाए या पेट में दर्द हो तो उसे न किसी से बोलना अच्छा लगता है और ना ही संसार की कोई चीज अच्छी लगती है और ना ही उसका ज्ञान उसके लिए किसी तरह

**साप्ताहिक सत्संग**

कल्याणकारी होता है , वैसे ही जो देश शक्तिशाली नहीं होता उस देश का नागरिक सुखी नहीं होता ! देश शक्तिशाली तब होता है जब देश के नागरिक छुआछूत , जाति पाँति , मत पंथ मजहब तथा अन्य प्रकार की बुराइयों से दूर रहकर एक दूसरे से प्रेम करने वाले हो और राष्ट्र को समर्पित हो । हमें सच्ची दुर्गा पूजा तो इजराइल में होती दिखाई देती है जहां का एक-एक नागरिक सैनिक है और अपने राष्ट्र के लिए समर्पित है ! कुमारी तृप्ति शास्त्री ने कहा "माता दुर्गा प्रेम साहस वीरता धैर्य तथा पवित्रता का प्रतीक है हमें भी अपने अंदर इन गुणों का आधान करना चाहिए । इस अवसर पर विचित्रपाल सिंह, पंजाब सिंह , कुमारी कौशिकी रानी श्रीमती मुन्नी देवी श्रीमती मिथिलेश रानी श्रीमती सरोज देवी श्रीमती दया शर्मा कुमारी ईशा आदि मौजूद रहे

## प्रत्येक व्यक्ति को श्री राम का अनुयायी होना चाहिए : संजीव रूप

**आर्यावर्त केसरी ब्यूरो**

**बिल्सी,** तहसील क्षेत्र के यज्ञ तीर्थ गुधनी ग्राम में स्थित आर्य समाज मंदिर में विजयदशमी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । इस अवसर पर यज्ञ करके राष्ट्र कल्याण की तथा विश्व शांति की कामना की गई । अंतर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य संजीव रूप ने कहा "बुराई छोड़ने का संकल्प लेना ही सही मायने में रावण का पुतला जलाना है ! रावण बुराई का प्रतीक है राम अच्छाई के प्रतीक है ! प्रत्येक व्यक्ति को राम का अनुयाई होना चाहिए ! यदि आप चोरी करते हैं मिलावट करते हैं भ्रष्टाचार में लिप्त है हिंसक है इस ईर्ष्यालु है अहंकारी हैं तो आप रावण के ही अनुचर है । विजयदशमी का पर्व शस्त्र और शास्त्र की पूजा का दिन है ! आज के दिन हमें एक हाथ में शस्त्र और एक हाथ में शास्त्र लेने का संकल्प करना चाहिए क्योंकि बिना शास्त्र के शस्त्र बेकार है और बिना शस्त्र के शास्त्र बेकार है ! वैदिक विदुषी कुमारी तृप्ति शास्त्री ने कहा "रामायण के सभी पात्र अनुकरणीय है ! सुग्रीव और विभीषण मित्रता की नई परिभाषा देते हैं वहीं भरत लक्ष्मण भ्रातत्व प्रेम की अनोखी मिशाल पेश करते हैं ! सीता माता आज भी नारी जाति के लिए आदर्श है । इस अवसर परआर्य समाज के सभी सदस्य व आर्य संस्कारशाला के बच्चे मौजूद रहे

# वृक्ष धरा के आभूषण हैं...

**आओ, अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान दें!**

वृक्ष असंख्य आयामों में प्रकृति की समस्त इकाइयों के संग सहयोगी और पूरक होते हैं।वृक्ष प्राण वायु तो प्रदान करते ही हैं, साथ ही हानिकारक कॉर्बन डाई ऑक्साइड को सोख लेते हैं। इससे वातावरण में सन्तुलन बना रहता है। वृक्ष वर्षा चक्र एवम् ऋतु चक्र को व्यवस्थित बनाए रखने में भी महत्व पूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। ये पशु पक्षियों को आश्रय देते हैं तथा धरती को उर्वरा बनाते हैं। वृक्ष छाया ही नहीं, फल भी देते हैं। जो वृक्ष फल नहीं देते, वो वातावरण को शुद्ध बनाए रखने में अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं। प्रकृति में विद्यमान सभी इकाइयां परस्परता में, निरन्तर संगीतमयता में अपने कर्तव्य और दायित्व का निर्वहन करते हुए, विकास दर विकास की निरन्तरता को बनाए रखती हैं। प्रकृति में विद्यमान समस्त इकाइयां सभी इकाइयों का पोषण करने और कराने में निरन्तर सहयोगी होती हैं। प्रकृति में विद्यमान समस्त इकाइयां प्रयोजन सहित हैं।

आओ! हम आज ही अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का संकल्प लें और पर्यावरण संरक्षण में अपना महती योगदान दें।

**आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (रजिस्टर्ड), अमरोहा**
(मो. 8630822099, 9412139333)

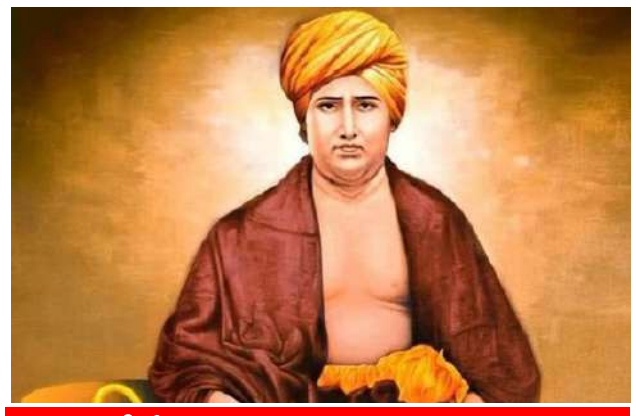

## महर्षि देव दयानन्द की द्विशताब्दी जयंती पर कृतज्ञांजलि

पाक्षिक आर्यावर्त केसरी के विदुषी/ विद्वान पाठकों का हार्दिक स्वागत व अभिनंदन है ।ज्ञातव्य है कि महर्षि देव दयानंद सरस्वती का द्वि शताब्दी वर्ष चल रहा है। महर्षि देव दयानंद के मानस पुत्र कविवर वीरेंद्र कुमार राजपूत, ऋषि जी के ग्रंथों के स्वाध्याय से प्रेरणा प्राप्त करके चारों वेदों के हिंदी काव्यार्थ की साधना कर रहे हैं। इस क्रम में वे साम, अथर्व यजुर्वेद का काव्यार्थ पूर्ण कर चुके हैं एवं ऋग्वेद के लगभग पांच हजार मंत्रों का लक्ष्य साध चुके हैं जो तीन संग्रहों में प्रकाशित हो चुके हैं। आदरणीय राजपूत जी ने वर्षों पूर्व, महर्षि दयानंद के जीवन वृत पर दयानंद शतक नामक काव्य रचना का सृजन किया था। १ से१५ अगस्त २०२४ के अंक से उस काव्य रचना का धारावाहिक प्रकाशन पाक्षिक आर्यावर्त केसरी के सुधि पाठकों के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रयास कैसा लगा ?अपने आशीष संदेशों से अवगत अवश्य कराइएगा।

**शुभेच्छुः**
**बृजेन्द्र सिंह वत्स, साहित्य संपादक।**

# दयानन्द-शतक

**( गतांक से आगे)**

**दयानन्द का बोध**

**१०**

सोता व्यक्ति खोता शिव-रात्रि- व्रत - लाभ, यह--
बात कह तात, आँख मूँद कर सो गए;
मूषक चढ़े हैं देव - प्रतिमा, चढ़ावा चढ़ा-
खाते वह निर्भीक, मग्न मन हो गए ।
देख यह दृश्य, मूर्ति - पूजन- भविष्य सब-
मूल का हविष्य हुआ, डंक सा चुभो गए;
जैसा था पिता ने कहा शिव की कथा में, कहाँ
वैसा शिव, भाव यह मन को डुबे गए ।।

**११**

जैसे कुहरे में नहीं दीखता है साफ साफ,
वैसा परदा था चहुँ ओर भ्रम-जाल का;
काँपने लगा था विश्वास - वट-वृक्ष बड़ा,
ऐसा उस काल चला अंधड़ कुचाल का
तात को जगा के बात पूछी, अति व्यग्र भाव;
सब ही बताया हाल, मन के धमाल का;
बोले वह " दरस है शिव का असाध्य अब,
मात्र मूर्ति-पूजन विधान कलि- काल का ।। "

**१२**

मूल संतुष्ट था न, तात की अपुष्ट बात-
सुनके, लगा कि विश्वास को छला गया;
धार तत्काल लिया मूर्ति है असार, वह-
छोड़ के जगार, निज घर को चला गया ।
मात हुई व्यग्र, अति व्यग्र खड़ा पुत्र देख,
तब ये कहा कि "नहीं मुझसे रहा गया",
मात से मिठाई माँग खाई व्रत तोड़ कर,
भूल कर तात डर, नींद में चला गया ।

( शेष अगले अंक में )

**कविवर वीरेन्द्र कुमार राजपूत**
**देहरादून, उत्तराखंड।**

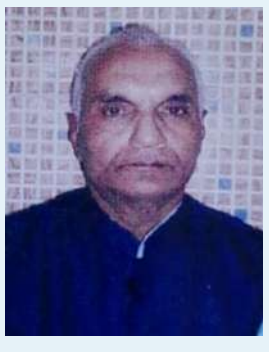

# इसी में है बुद्धिमत्ता और सफलता

**आर्यावर्त केसरी समाचार**

"जब व्यक्ति संसार में जन्म लेता है, तब उसके हाथ खाली होते हैं। उसके पास कोई धन संपत्ति रुपया पैसा आदि भौतिक वस्तुएं कुछ भी नहीं होता। और जब संसार से जाता है, तब भी यही स्थिति होती है। वह कुछ भी रुपया पैसा या बर्तन बिस्तर कपड़े आदि भौतिक वस्तुएं अपने साथ नहीं ले जाता।"

"हां, जब वह संसार में आता है, तो पूर्व जन्मों के कर्म और संस्कार अपने साथ लाता है। और जब संसार से जाता है, तब भी वह अपने कर्म और संस्कार साथ लेकर जाता है।" इससे पता चलता है, कि "वह जीवन भर जो भी अच्छे बुरे कर्म करता है, और उनके जो भी अच्छे बुरे संस्कार बनते हैं, बस वही उसकी अपनी और असली संपत्ति है। वही उसके साथ अगले जन्म में जाती है।"

जब व्यक्ति संसार में आता है, और यहां पुरुषार्थ करके बहुत सी विद्या धन संपत्ति बर्तन बिस्तर कपड़े आदि वस्तुएं प्राप्त कर लेता है, तो उसका यह कर्तव्य होता है, कि "उसकी आवश्यकतानुसार धन संपत्ति आदि वस्तुओं को अपने पास रख कर, जो उसके पास अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तुएं हों, उनको वह योग्य पात्रों में बांट दे। प्रेम और सम्मान भी दूसरे योग्य व्यक्तियों को देते रहना चाहिए। वह जितना अधिक बांटेगा, उतना ही उसका पुण्य कर्म बढ़ेगा। और यही पुण्य कर्म उसकी असली संपत्ति है, जिसे वह अपने साथ अगले जन्म में भी ले जा सकेगा।"

यदि किसी व्यक्ति के पास, धन संपत्ति आदि वस्तुएं, उसकी आवश्यकता से जितनी मात्रा में अधिक हों, और वह उन्हें योग्य पात्रों में बांट दे, तो इसका एक और लाभ यह भी है, कि "ईश्वर की कृपा और उसकी कर्म फल व्यवस्था से उसे धन सम्पत्ति बर्तन बिस्तर आदि वस्तुओं की कोई कमी नहीं रहती। ये सब वस्तुएं उसे और अधिक अधिक वापस मिलती ही रहती हैं। बल्कि ऐसा करने से उसे समाज में आदर और सम्मान भी विशेष रूप से मिलता है। इसलिए बांटने में लाभ ही दिखाई देता है, कोई हानि नहीं दिखाई देती।"

एक और बात -- "धन संपत्ति आदि वस्तुएं अपनी आवश्यकता से अधिक मात्रा में संग्रह करने पर, उनकी रक्षा आदि करने संबंधी अनेक प्रकार के कष्ट और बढ़ जाते हैं। इसलिए उन कष्टों से बचने के लिए तथा पुण्य कर्म अपने साथ अगले जन्म में ले जाने के लिए, व्यक्ति को अपने पास विद्यमान आवश्यकता से अधिक धन संपत्ति आदि वस्तुएं और सम्मान योग्य पात्रों में बांटते रहना चाहिए। इसी में बुद्धिमत्ता और जीवन की सफलता है।"

**"स्वामी विवेकानन्द**
**परिव्राजक,**
**निदेशक - दर्शन योग**
**महाविद्यालय, रोजड़,**
**गुजरात."**

# योगासन एवं प्राणायाम

**इस स्तंभ के अंतर्गत योगासन एवं प्राणायाम के विषय में क्रमशः सामग्री प्रस्तुत की जा रही है, जिससे पाठकगण लाभान्वित हो सकते हैं। -संपादक**

## गोमुखासन

**नामकरण-** इस आसन में शरीर की स्थिति गाय के मुख के समान हो जाती है, अतः इसका नाम गोमुखासन (गो$मुख$आसन) रखा गया है।

**अभ्यास विधि-** दोनों पैर सामने फैलाकर बैठें। अब दाएं (त्पहीज) पैर को घुटने से मोड़कर उसकी एड़ी को बाएं (स्मजि) नितम्ब के पास ले आयें और एड़ी वाले भाग पर बैठ जाएँ। इसके पश्चात बाएँ पैर को घुटने से मोड़कर पंजे को दाएँ नितम्ब के बाहर लगाएं तथा घुटने को दाएँ पैर के घुटने के ऊपर सटाकर रखें अर्थात दाएँ घुटने को नीचे व बाएँ घुटने को ऊपर, दोनों घुटने एक सीध में रहें। अब बाएँ हाथ (जो पैर ऊपर है) को ऊपर की ओर उठाकर व मोड़कर कमर के पीछे ले आयें, दूसरे दाएँ हाथ को नीचे की ओर से कमर के पीछे ले जायें तथा एक हाथ के पंजे से दूसरे हाथ के पंजे को पकड़ें। इस अवस्था में श्वांस भर कर मेरूदण्ड को तान कर तथा छाती को फुला कर रखें। कुछ समय इस स्थिति में रूकने के बाद, हाथों को छोड़कर सामान्य अवस्था में आयें व श्वांस बाहर निकालें। दूसरी ओर से भी इसी प्रकार से दोहरायें।

**लाभ -**

1. यह आसन अण्डकोष वृद्धि व आंत्र वृद्धि को दूर करता है।
2. इससे बहुमूत्र विकार एवं जो बच्चे रात्रि में बिस्तर पर पेशाब करते हैं, ठीक हो जाते हैं।
3. यह आसन स्त्री रोगों में भी लाभकारी है।
4. सामान्य सन्धिवात एवं गठिया में लाभप्रद है।
5. यह आसन यकृत, गुर्दों व वक्षस्थल को बल देता है।
6. इसके अभ्यास से मन शान्त होता है।
7. सर्वाइकल स्पोंडोलाइटिस एवं कमर दर्द में भी लाभकारी है।

# ।। प्रकृति।।

जड़,जंगम,जगत दृश्यमान,
भौतिक रूप कहाती प्रकृति।
पंचभूत तत्वों से निर्मित,
मिलकर बनती सारी सृष्टि।।
शास्त्रों में धर्म के तीन वाद,
विदूषकों ने हमें बतलाएँ।
ईश्वर,जीव,प्रकृति मिलकर,
त्रेतवाद का रूप समझाएँ।।
पृथ्वी,जल,अग्नि,गगन,वायु,
इन्हीं का सब अंश कहाये।
अद्भुत निराले रूप प्रकृति के,
इसी में सब रंग समाये।।
निर्माण,विकास,विज्ञान,भोग,
सौंदर्य प्रकृति का हिस्सा है।
प्राणी मात्र की सर्वांगीणता की,
अंतस चेतना का किस्सा है।।
ईश्वर प्रदत्त उपहार मिला ,
अनमोल धरोहर है प्रकृति।
सारे जगत में सबसे सुंदर,
मानव रचना अनुपम कृति।।
सारे ब्रह्मांड का मूल ईश्वर !
आओ अध्यात्म प्राप्त करें।
जगत रचा सारा जिसने,
आओ नित-नित प्रणाम करें।।

**चन्द्रहास कुमार "हर्ष"**
**मुरादाबाद (उ०प्र०)**

# आर्यसमाज सत्य सिद्धान्तों पर आधारित संगठन

**आर्यावर्त केसरी समाचार**

आर्यसमाज एक धार्मिक एवं सामाजिक संगठन है जो विद्या से युक्त तथा अविद्या से सर्वथा मुक्त सत्य सिद्धान्तों को धर्म स्वीकार करती है और इनका देश देशान्तर में बिना किसी भेदभाव के प्रचार करती है। आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व देश व विश्व अविद्या से ग्रस्त था। धर्म तथा मत–मतान्तरों में अविद्या प्राबल्य था। लोगों का इस ओर ध्यान ही नहीं था। अविद्या के कारण ही देश व समाज का पतन होने के साथ आर्य जाति में अनेकानेक दु:ख व पतन की अवस्था उत्पन्न हुई थी। लोग दु:खों को दूर करने का प्रयास तो करते थे परन्तु अविद्या को दूर करने तथा विद्या को अपनाने की ओर किसी का ध्यान नहीं था। ऋषि दयानन्द ने बाल्यकाल में ही मूर्तिपूजा में निहित अविद्या को जाना था। उन्होंने मूर्तिपूजा से जुड़ी मान्यताओं व आस्थाओं पर ज्ञान व बुद्धि को सन्तुष्ट करने वाले प्रश्न अपने पिता व अनेक विद्वानों से किये थे। किसी के पास उनकी शंकाओं को दूर करने का ज्ञान व साधन नहीं थे। ऐसी स्थिति में ऋषि दयानन्द ने सत्य ज्ञान की प्राप्ति व विद्या की खोज को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था तथा अपने जीवन के 22वें वर्ष में अपना पितृ–गृह त्याग कर वह सत्य ज्ञान सहित ईश्वर, जीवात्मा, ईश्वरोपासना, मनुष्य के कर्तव्य, दु:खों से मुक्ति के उपायों सहित देश की उन्नति के साधन व उपायों को जानने के लिये निकल पड़े थे। 16 वर्ष तक वह अपने इष्ट को जानने में लगे रहे। इस बीच वह एक सच्चे योगी बन चुके थे। मथुरा के गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से उनको वेद और वेदांगों का ज्ञान प्राप्त हुआ था। इस ज्ञान से उनकी सभी शंकायें वा अविद्या दूर हुई थी तथा उन्होंने जितना सोचा भी नहीं था, उससे कहीं अधिक ज्ञान उन्हें प्राप्त हुआ था। सन् 1863 में विद्या पूरी कर लेने पर स्वामी विरजानन्द सरस्वती ने ही उन्हें देश व समाज से अविद्या को दूर कर विद्या का प्रसार करने की प्रेरणा की थी जिसे स्वीकार कर उन्होंने सन् 1863 से 30 अक्टूबर, सन् 1883 तक अपनी मृत्यु पर्यन्त सत्यज्ञान के भण्डार ईश्वरीय ज्ञान वेद तथा वेदानुकूल सिद्धान्तों व मान्यताओं का प्रचार किया। उन्होंने वेद ज्ञान के आधार पर सभी धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं की समीक्षा की और उनसे अविद्या व अज्ञान को दूर कर उन सबको अन्धविश्वासों, पाखण्डों तथा कुरीतियों से मुक्त किया था। आज के आधुनिक भारत में उनके विचारों व मान्यताओं का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। देश की आजादी सहित देश से अज्ञान व अविद्या को दूर करने के लिये शिक्षा जगत में जो क्रान्ति हुई है, उसकी पृष्ठ–भूमि में भी ऋषि दयानन्द के सत्य–ज्ञान पर आधारित सिद्धान्तों का प्रभाव ही दृष्टि गोचर होता है। उनके बनाये दो नियम भी सर्वत्र स्वीकार किये जाते हैं जिसमें सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करने तथा अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करने का नियम मुख्य हैं। आर्यसमाज ह्यह्यवसुधैव कुटुम्बकम्ह्य की भावना से ओतप्रोत पूरे विश्व के मनुष्यों को एक ईश्वर की सन्तान मानकर उनके कल्याण की योजना प्रस्तुत करता है। सत्यार्थप्रकाश, पंचमहायज्ञ विधि तथा संस्कार विधि इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये ही रचे गये ग्रन्थ हैं। इनका अध्ययन कर मनुष्य अविद्या व अज्ञान से मुक्त हो जाता है जिससे उसके जीवन की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति होती है।

आर्यसमाज एक धार्मिक एवं सामाजिक संगठन वा अपने महान् उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एक आन्दोलन है। आर्यसमाज मनुष्यों में श्रेष्ठ गुणों का आधान व उनको मनुष्य जीवन में व्यवहारिक रूप देने को ह्यह्यधर्मह्य मानता है। सत्य व न्याय मनुष्य जीवन में धारण करने योग्य धर्म है। जो मनुष्य अपने जीवन में सत्य एवं पक्षपात रहित न्याय का पालन करता है वही मनुष्य धार्मिक कहलाता व कहा जा सकता है। सत्य के स्थान पर असत्य और न्याय के स्थान पर पक्षपातपूर्ण व्यवहार करने वाले मनुष्य, संगठन व समुदाय धार्मिक नहीं होते। सत्य के साथ, परस्पर प्रेम, त्याग, अपरिग्रह, बाह्य व आन्तरिक शौच, परोपकार, दूसरों की सेवा, सहायता, मार्गदर्शन, विद्यादान, ईश्वर के सत्य स्वरूप का यथोचित ज्ञान एवं तदनुरूप उपासना, वायु शुद्धि एवं ईश्वर की उपासना के लिये अग्निहोत्र यज्ञ करना, आत्मा की शुद्धि के लिए ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म् सहित गायत्री आदि मन्त्रों का जप व चिन्तन करना आदि भी धर्म पालन के अन्तर्गत आते हैं। मत–मतान्तरों में हम इन बातों की उपेक्षा देखते हैं। मत–मतान्तरों की बहुत सी बातें एक दूसरे समुदाय के विरुद्ध तथा सत्य ज्ञान से रहित भी देखी जाती हैं। अत: कोई भी मत धर्म वा सत्यधर्म का पर्याय नहीं हो सकता। ऋषि दयानन्द ने अपने ज्ञान के आधार पर सभी मत–मतान्तरों की समीक्षा कर उनमें निहित अविद्या को बानगी के रूप में प्रस्तुत किया है जिससे मत–मतान्तरों में ज्ञान की अपूर्णता सहित उनकी अनेक मान्यताओं का सत्य के विपरीत होना विदित होता है। अत: सभी मत धर्म नही कहे जा सकते।

धर्म का पर्याय सत्य वैदिक मान्यतायें एवं सिद्धान्त हैं। सत्य मान्यतायें वह होती हैं जिनकी ज्ञान, विवेक, चिन्तन व मनन सहित तर्क एवं युक्तियों से पुष्टि होती हैं तथा जो अज्ञान से मुक्त होती हैं तथा मानव मात्र सहित प्राणी मात्र के लिये भी हितकारी होती हैं। ऐसी मान्यतायें वेद एवं वैदिक साहित्य में ही प्राप्त होती है। ऋषि दयानन्द ने वेदों को स्वत: प्रमाण बताया है। वेदेतर समस्त साहित्य परत: प्रमाण की कोटि में आता है। जो वेदानुकूल नहीं है वह किसी भी ग्रन्थ में क्यों न हो, प्रमाण योग्य व माननीय नहीं होता। संसार में ईश्वरीय वाक्य वा ईश्वरीय ज्ञान केवल व एकमात्र वेद हैं। वेद ज्ञान के समान ईश्वर ने सृष्टि उत्पत्ति के बाद किसी मनुष्य व जाति को धर्म ज्ञान नहीं दिया है। वेद ईश्वर प्रदत्त प्रथम व अन्तिम ज्ञान कहा जा सकता है। यदि इस मान्यता को नहीं मानेंगे तो ईश्वर सर्वज्ञ एवं पूर्ण ज्ञानी होना सिद्ध नहीं किया जा सकेगा। वेद व वैदिक साहित्य के आधार पर ऋषि दयानन्द ने ईश्वर, जीव व प्रकृति संबंधी त्रैतवाद का सिद्धान्त दिया है जो तर्क एवं युक्ति सहित वेदों से भी पुष्ट हैं। अन्य मतों में इस सिद्धान्त का उल्लेख व चर्चा देखने को नहीं मिलती। अत: वेद ही संसार में सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और अपनी इसी महत्ता के कारण वह सब मनुष्यों का परमधर्म भी है। यह नियम भी ऋषि दयानन्द जी ने ही दिया है जो उनकी संसार को एक महानतम देन है। इन सिद्धान्तों व मान्यताओं को मानने से ही विश्व का कल्याण हो सकता है। आवश्यकता इस बात की है सभी मतों को परस्पर प्रेम व सद्व्यवहार–पूर्वक अपने अपने मत व दूसरे मतों के सिद्धान्तों का अध्ययन करना चाहिये और ऐसा कर–के उन्हें असत्य का त्याग और सत्य का ग्रहण करना चाहिये। आर्यसमाज यह कार्य करता है और इसी कारण आर्यसमाज देश व विश्व का प्रमुख धार्मिक एवं सामाजिक संगठन है। सब मनुष्यों को आर्यसमाज सहित इसके सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा संस्कारविधि सहित वेदभाष्य एवं ऋषि दयानन्द के जीवन चरितों का अध्ययन कर सत्य को स्वीकार तथा असत्य का त्याग करना चाहिये।

आर्यसमाज एक ऐसा धार्मिक संगठन है जिसके सिद्धान्तों के प्रति विज्ञान के अध्येता व वैज्ञानिक भी आकर्षित होते हैं। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी विज्ञान के विद्यार्थी थे। उन्हें जनता ह्यमनीषीह्य के नाम से जानती है। वह भी आर्यसमाज के प्रत्येक सिद्धान्त के न केवल अनुयायी थे अपितु वह सभी सिद्धान्तों को अपने मौलिक तर्कों से सत्य सिद्ध करते थे। विदेशी विद्वानों की वेद विरुद्ध मान्यताओं का भी उन्होंने तर्कों सहित सप्रमाण खण्डन किया। वह वैदिक धर्म के आदर्श आचरण करने वाले मनीषी व पालक थे। डा. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी उच्च कोटि विद्वान व वैज्ञानिक थे। तेईस से अधिक लोगों ने उनके मार्गदर्शन में डी.एस–सी. व पी.एच–डी. की उपाधियां प्राप्त की। वह भी वेद और सत्यार्थप्रकाश के विद्वान, व्याख्याता व अनुयायी थे। उन्होंने चार वेदों का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया है। डा. रामप्रकाश जी भी रसायन शास्त्र के प्रोफेसर व अनुसंधानकर्ता विद्वान, राजनेता व सांसद रहे थे। आप भी वैदिक धर्म, ऋषि दयानन्द एवं आर्यसमाज के आदर्श के अनुयायी थे।यह सूची लम्बी है। इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि वेद एवं विज्ञान में कहीं किसी प्रकार का विरोध नहीं है। यह बात मत–मतान्तरों पर लागू नहीं होती। वेद और आर्यसमाज के सिद्धान्तों को मानने से मनुष्य की सामाजिक उन्नति भी होती है। वेदानुयायी अन्धविश्वासों, पाखण्डों सहित सामाजिक भेदभाव के व्यवहारों से दूर रहते हैं। आर्यसमाज एक धार्मिक एवं सामाजिक संगठन है जो विद्या से युक्त तथा अविद्या से सर्वथा मुक्त सत्य सिद्धान्तों को धर्म स्वीकार करती है और इनका देश देशान्तर में बिना किसी भेदभाव के प्रचार करती है। आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व देश व विश्व अविद्या से ग्रस्त था। धर्म तथा मत–मतान्तरों में अविद्या प्राबल्य था। लोगों का इस ओर ध्यान ही नहीं था। अविद्या के कारण ही देश व समाज का पतन होने के साथ आर्य जाति में अनेकानेक दु:ख व पतन की अवस्था उत्पन्न हुई थी। लोग दु:खों को दूर करने का प्रयास तो करते थे परन्तु अविद्या को दूर करने तथा विद्या को अपनाने की ओर किसी का ध्यान नहीं था।

**–मनमोहन कुमार आर्य**

# ईश्वर पाप को क्षमा नहीं करता तो फिर स्तुति व प्रार्थना किस लिए ?

**आर्यावर्त केसरी ब्यूरो**

समाधान :-

"अव नो वृजिना शिशीचा वनेमानृचः ।
नाब्रह्मा यज्ञ ऋधग्जोषति त्वे ।।"
(ऋग्वेद १०/१०५/८)

इस वेद मन्त्र में हम ईश्वर से मात्र यह प्रार्थना कर रहे हैं कि हमारे पापों को हमसे दूर करिये, इसका अर्थ यह नहीं कि ईश्वर हमारे पापों को क्षमा कर देगा` यदि पाप क्षमा हो जाये, तो ईश्वर न्यायकारी कैसे हुआ ?

इस प्रकार व्यक्ति पाप करता जायेगा और ईश्वर से क्षमा मांगता जायेगा, फिर यह उस व्यक्ति का स्वभाव बन जायेगा ।

मनुष्य आत्मनिरीक्षण और आत्म नियंत्रण से शुद्ध और प्रकाशित हो जाता है । ऐसा मनुष्य इतनी शक्ति को प्राप्त करता है कि पापों से दूर हो जाता है`

वेद ने संकेत किया है कि आप (ईश्वर) सदैव हमारे कुकर्मों को छुड़ाकर हमारी सहायता करें एवं हम पाप से बचे रहें`

प्राणी जगत का रक्षक, प्रकृष्ट ज्ञान वाला
प्रभु हमें पाप से छुड़ाये ।
(अथर्व० ४/२३/१)

हे सर्वव्यापक प्रभु ! जैसे मनुष्य नौका द्वारा नदी को पार कर जाते हैं, वैसे ही आप हमें द्वेष रुपी नदी से पार करा दीजिये। हमारा पाप हमसे पृथक होकर दग्ध हो जाये ।
(अथर्व० ४/३३/७)

हे ज्ञानस्वरूप प्रभु ! आप हमारे अज्ञान
को दूर रख पाप को दूर करों ।
(ऋ० ४/११/६)

"ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेअस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम
उक्तिं विधेम ॥"
(ऋग्वेद १/१८९/१)

हे ज्योतिर्मय परमेश्वर ! मुझे सुपथ पर ले चलो, मैं सन्मार्ग पर चलते-चलते ही धन और ऐश्वर्य का स्वामी बनूं और मुझे उन्हीं मार्गों पर चलाना ।

ईश्वर प्रदत्त मार्ग पर चलते हुए पाप कर्मों से दूर रहना है ।

इस प्रकार ईश्वर द्वारा हमारा पाप क्षमा नहीं करने पर भी वह स्तुत्य है`

ईश्वर भक्ति

जिन साधनों से ईश्वर का साक्षात्कार होता है, उसे भक्ति कहते हैं । भक्ति के तीन भाग हैं :--

स्तुति, प्रार्थना, उपासना ।

स्तुति - स्तुति का अर्थ है -
ईश्वर के गुणगान करना,
उसके गुणों का चिन्तन करना और अपने जीवन में उन गुणों का धारण कर उनसे लाभ उठाना । मनुष्य का यह स्वाभाविक गुण है कि वह प्रत्येक वस्तु के गुणों को जानना चाहता है, छोटा बच्चा भी जब किसी वस्तु को देखता है तो पूछता है कि यह क्या है, ऐसा क्यों है, इसका नाम क्या है ? इत्यादि ।

प्रार्थना - प्रार्थना का अर्थ है, किसी वस्तु के गुण जानने के पश्चात उस वस्तु को पाने की प्रबल इच्छा का उत्पन्न हो जाना । ईश्वर से कुछ माँगने का नाम प्रार्थना है । यह तीन प्रकार की है :--

क) उत्तम प्रार्थना :

जिससे संसार के प्राणीमात्र का भला हो ऐसी प्रार्थना करना उत्तम प्रार्थना है ।

दृष्टव्य,

निस्सन्तान सन्तान युक्त हो,
सन्तान वाले पुत्र पौत्रों से युक्त हो,
निर्धन धन-सम्पन्न हो,
तथा सब लोग शतायु हो,
समय-समय पर वर्षा हो,
पृथिवी हरे भरे अन्नों से सुशोभित हो,
सारा देश क्षोभ से रहित हो,
देश के सभी नागरिक ज्ञानी, विज्ञानी, विद्वान निर्भय होकर विचरें,
संसार के सब प्राणी सुखी हों,
और कोई भी दुःखी दृष्टिगोचर न हो ।

ख) मध्यम प्रार्थना :-

जिसमें आत्म-कल्याण और आत्महित की भावना हो`

दृष्टव्य,

मेरा जीवन शुद्ध और पवित्र हो, बल, बुद्धि, यश, तेज, सत्यता, उदारता आदि शुभ गुणों का मेरे जीवन में वास हो ।

मैं विषयों, व्यसनों, दुगुर्णों एवं मृत्यु से पृथक होकर मोक्षानन्द का लाभ करूं ।

ग) निकृष्ट प्रार्थना :-

जिसमें अपना स्वार्थ और अन्यों के बुरे की भावना भरी हो । दृष्टव्य,

मुझे धन, पशु, सन्तान, सुख की प्राप्ति हो जाये और मेरे शत्रु इन वस्तुओं से रहित होकर दुःख, दारिद्रय और रोगों को प्राप्त कर मौत के दर्शन करे । ऐसी प्रार्थना ईश्वर कभी स्वीकार नहीं करते ।

उपासना - उपासना का अर्थ है ईश्वर के समीप बैठना, ईश्वर के गुणों को अपने में धारण करके उस जैसा बनने का प्रयत्न करना ।

जीव किसी भी अवस्था में ब्रह्म नहीं हो सकता । हाँ, समाधि अवस्था में कुछ समय के लिए वह अपने को ब्रह्म समान समझने लगता है`

जैसे लोहा आग में पड़कर आग के समान हो जाता है । परन्तु आग नहीं बन जाता, आग से पृथक होने पर पुनः लोहा ही रहता है ।

**राजेश वर्णवाल**

## सबको आर्य समाज से जुड़ना चाहिए।

**आर्यावर्त केसरी ब्यूरो**

इसलिए जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्य के अनुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अभी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस (आर्य)समाज को यथावत सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं।

**ऋषि दयानंद सरस्वती**
**सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास**

**शील चंद्र आर्य कैलसा**
**बॉर्डर, अमरोहा**
**सत्यार्थ प्रकाश**
**वितरित किए।**

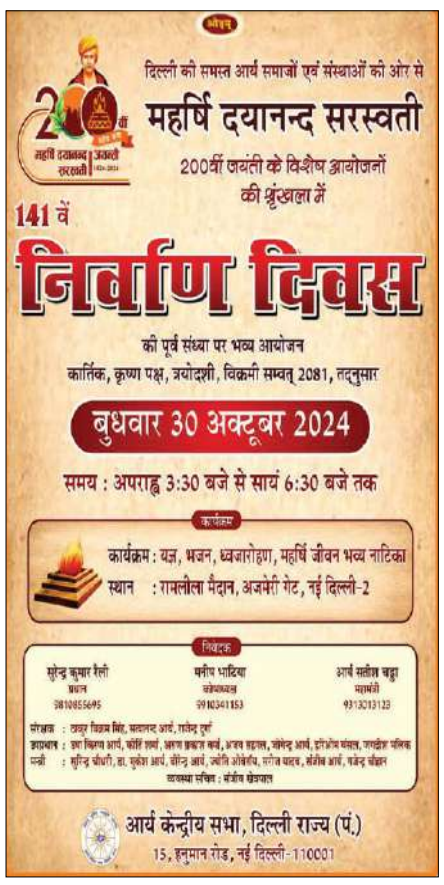

आदरणीय डॉ. आचार्य धर्म शास्त्री जी संस्थापक निदेशक आर्य गिरधारीलाल महर्षि दयानंद ट्रस्ट (पंजीकृत) कोटद्वार फॉर्मर प्रिंसीपल सेक्रेटरी एम्स दिल्ली को उत्तराखंड रत्न *कर्मबीर जयानन्द भारतीय जी की जयंती के अवसर पर पंचपुरी (बैजरों) में आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्माननित किये जाने पर बहुत बहुत बधाई एवम हार्दिक शुभकामनाएं ।

**सादर - डॉ.सुरेन्द्र लाल आर्य 'सर्वोदयी पुरूष' संस्थापक अध्यक्ष आर्य गिरधारी लाल महर्षि दयानंद ट्रस्ट (पंजीकृत) कंवनगरी कोटद्वार**

## आर्य जगत की चित्रमय गतिविधियों की झलक...

### गुरुकुल में हुआ यज्ञ एवं वेद प्रचार

दयानन्द गुरुकुल आश्रम राजघाट (नरौरा) जिला- बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश) में यज्ञ एवं वेद प्रचार के कार्यक्रम की एक झलक_ इस अवसर पर सैकड़ो जन उपस्थित रहे ।

**********

### आर्य समाज में 21 कुंडीय महायज्ञ

आर्य समाज ज्वालानगर, सिविल लाइन्स रामपुर में 21कुण्डीय वैदिक महायज्ञ 15 से 17 अक्टूबर तक संपन्न हो रहा है।

**********

आर्य समाज साबली आदि पंचपुरी गढ़वाल उत्तराखण्ड के तत्वावधान में कर्मवीर जयानंद भारतीय की 144 वीं जयन्ती समारोह का भव्य दृश्य। भारतीय जी की जयंती राजकीय मेले के साथ मनाई गई।

**आचार्य डॉ० धर्म शास्त्री।**

### राष्ट्र कल्याण के लिए किया यज्ञ

वैदिक साधना आश्रम, तपोवन देहरादून में द्रोणास्थली कन्या गुरुकुल की आचार्या व ब्रह्मचारणीयों द्वारा यज्ञ सम्पन्न कराया गया।

## आर्यावर्त प्रकाशन द्वारा भव्य कैलेण्डर प्रकाशन

यह है कैलेण्डर का प्रारूप साइज 19 गुणा 25 ईंच उत्तम क्वालिटी का आर्ट शीट पेपर
ऊपर तथा नीचे पत्ती युक्त लैमिनेटेड बहुरंगी छपाई का भव्य कैलेण्डर

**वर्ष 2024 के अपने कैलेण्डरों का आदेश आज ही बुक करायें**

**इस स्थान पर आपका नाम पता एवं संस्थान/प्रतिष्ठान का विवरण या जो सामग्री आप देना चाहेंगे प्रकाशित की जाएगी।**

**प्रचारार्थ मूल्य 1350 रूपये सैंकड़ा वितरक में नाम तथा पते के प्रकाशन की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध है कृपया अपना प्रकाशन आदेश निम्न चलित भाष पर अंकित कराने का कष्ट करें 9412139333, 8755268578 अपनी धनराशि 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC Code : SBIN0000610) में आदेश से पूर्व या आदेश की आपूर्ति होने के बाद भी भेज सकते हैं धन्यवाद**

**- डॉ0 अशोक कुमार आर्य (सम्पादक)**

**कृपया अपना ऑर्डर आज ही बुक करायें तथा जन जन तक**

**डाक द्वारा भेजने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।**

मिशनरी भाव से सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने के लिए पुरोहित-प्रचारक, उपदेशक, भजनोपदेशक व आर्य वीर दल प्रशिक्षक एवं योगा टीचर बनने के इच्छुक युवक / युवतियां विश्व शतिविश्व शान्ति गायत्री मिशन (ट्रस्ट) रजिस्टर्ड चण्डीगढ़ से शीघ्र सम्पर्क करें । इच्छुक युवक / युवतियों की योग्यता कम से कम दसवीं कक्षा पास अथवा उससे अधिक होनी चाहिए । अधिक योग्यता वाले को वरीयता प्रदान की जाएगी ।

**सचिव / चेयरमैन - विश्व शान्ति गायत्री मिशन चण्डीगढ़**
**सम्पर्क सूत्र मोबाइल**
**9416034759, 9466472375, 9466850651, 9915595724**

**पुरोहित - प्रचारक एवं योगा टीचर बनने के इच्छुक युवक / युवतियां शीघ्र सम्पर्क करें**

## वार्षिक तथा आजीवन सम्मानित सदस्यों की सेवा में आवश्यक सूचना

आदरणीय महोदय/महोदया! सादर नमन, आशा है स्वस्थ एवं सानंद होंगे।

**आपकी आर्यावर्त केसरी की वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि समाप्त हो चुकी है।**

अतः अनुरोध है कि आगामी वर्ष (2023-24) के नवीनीकरण हेतु वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि रू0 100/- अथवा आजीवन सदस्यता सहयोग राशि (10 वर्षीय) रु. 1100/- निम्न बचत खाते (S.B. A/C) में जमा करने का कष्ट करें :

खाते का नाम : आर्यावर्त केसरी खाता संख्या : 30404724002 IFSC कोड : SBIN0000610

**शाखा : भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा**

कृपया उक्त खाते में अपनी सहयोग राशि जमा करने के उपरांत मो. नं. 9412139333 अथवा 7017448224 पर अवगत कराने का कष्ट करें। उल्लेखनीय है कि समस्त आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र उनके जन्म - दिवस के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित आर्यावर्त केसरी में प्रतिवर्ष प्रकाशित किए जायेंगे।

सादर- सधन्यवाद शुभाकांक्षी-

कृते आर्यावर्त केसरी/ प्रभारी-प्रसार

# महिला आर्य समाज में धूमधाम से मना नवरात्रि महोत्सव

**(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)**

**कासगंज।** महिला आर्य समाज में अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह में 7 दिनों तक नवरात्रि महोत्सव का भव्य आयोजन हुआ।

इस अवसर पर बृहद यज्ञ के यजमान नगर के प्रमुख व्यवसाई सिंगल प्रेस वाले श्री कौशल सिंघल और उनकी धर्मपत्नी रेखा सिंगल तथा रेडीमेड थोक वस्त्र विक्रेता श्री दीपक गुप्ता एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रूबी गुप्ता बने। यज्ञ की ब्रह्मा चंद्रावती कन्या गुरुकुल प्रहलादपुर कासगंज की अधिष्ठात्री आचार्या डा. धारणा याज्ञिकी ने यज्ञ संपन्न कराया एवं उनके गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने सुंदर सस्वर वेद पाठ किया, और ईश्वर स्तुति एवं ऋषि भक्ति के भजन सुना कर सबको मंत्र मुग्ध कर दिया। इस अवसर पर आर्य समाज मंदिर के व्यवस्थापक पुरोहित श्री सुकांत आर्य ने आज की नौजवान पीढ़ी को जागृत करने के लिए "ऐ वतन के नौजवान जा रहा है तू कहां, याद कर वो दास्तान जिसको गाता है जहां" गीत, सुनाया, जिसकी सभी ने मुक्त कंठ से सराहना की। इस भव्य आयोजन में आर्य जगत की विदुषी आचार्य धारणा जी ने अपने प्रवचन में कहा कि रावण वास्तविक 10 सर वाला नहीं था, वह तो चार वेदों और 6 शास्त्रों का ज्ञाता था, बहुत बड़ा विद्वान था। इसलिए उसको 10 सर वाला बताते थे, लेकिन उसकी एक बड़ी भूल के कारण उसे राक्षस कहा गया और श्री राम ने उनका वध किया। इस अवसर पर आर्य जगत के विद्वान डॉक्टर ओमप्रकाश ने अपने प्रवचन में कहा कि सही मायने में नवदुर्गा जागरण अर्थात अपने ही शरीर के 9 द्वारों की शक्ति का जागरण कर-के अपने शरीर को अयोध्या बनाना है, जिससे कोई शत्रु जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष, अहंकार और रोग आदि हमको हरा न सकें। आर्ष गुरुकुल एटा से आए ब्रह्मचारी शिव स्वरूप ने अपने वक्तव्य में कहा कि व्रत का अर्थ संकल्प होता है न के भूखे रहना। बिना वैद्य अथवा डॉक्टर की सलाह के भूखे रहना हानिकारक होता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश शासन में महिला आयोग की सदस्य श्रीमती रेणुका गौण ने की। उपस्थित लोगों में शहर के संभ्रांत श्री विशाल अग्रवाल, रचित अग्रवाल, प्रेमचंद साहू आर्य, पुष्पा साहू आर्य, आनंद साहू आर्य, श्रीमती शकुंतला देवी, श्रीमती प्रतिज्ञा यादव, माया देवी कुसुम लता देवी, सर्वोत्तम शर्मा, दिनेश जी बिरला, वेद प्रकाश अग्रवाल, छोटेलाल आर्य, हाथरस से आए सुभाष आर्य ग्राम गंगागढ़ आर्य समाज से कौशल किशोर शर्मा, राजेश आर्य आदि प्रमुख थे। इस अवसर पर सैकड़ो लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। अंत में सभी ने भोजन प्रसाद प्राप्त किया।




## "मृतक श्राद्ध कितना सही" विषय पर गोष्ठी संपन्न

### जीवित माता पिता की सेवा ही सच्चा श्राद्ध-श्रुति सेतिया

**(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)**

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में "मृतक श्राद्ध कितना सही" विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 674 वाँ वेबिनार था।

वैदिक प्रवक्ता आचार्या श्रुति सेतिया ने कहा कि जीवित माता पिता की सेवा ही सच्चा श्राद्ध है।भोजन की आवश्यकता शरीर को होती है आत्मा को नहीं। उन्होंने कहा कि मूल अर्थों में श्राद्ध,श्रावणी उपाकर्म के पश्चात अपने-अपने कार्यक्षेत्र में लौटते समय वरिष्ठों आदि के अभिनंदन सत्कार के लिए होता था।आज समाज में सबसे निर्बल व तिरस्कृत कोई हैं,तो वे हैं हमारे बुजुर्ग।वृद्धाश्रमों की बढ़ती कतारों वाला समाज श्राद्ध के नाम पर कर्मकाण्ड कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ ले तो यह भीषण विडम्बना ही है।यदि हम घर परिवारों में उन्हें उचित आदर-सत्कार,मान-सम्मान व स्नेह के दो बोल भी नहीं दे सकते तो श्राद्ध के नाम पर किया गया हमारा सब कुछ केवल तमाशा व ढोंग है।यों भी वह अतार्किक व श्राद्ध का गलत अभिप्राय लगा कर किया जाने वाला कार्य तो है ही। जब तक इसका सही अर्थ समझ कर इसे सही ढंग से नहीं किया जाएगा तब तक यह करने वाले को कोई फल नहीं दे सकता (यदि आप किसी फल की आशा में इसे करते हैं तो)।वैसे प्रत्येक कर्म अपना फल तो देता ही है और उसे अच्छा किया जाए तो अच्छा फल भी मिलता ही है।

मृतकों तक कोई सन्देश या किसी का खाया भोजन नहीं पहुँचता और न ही आपके-हमारे दिवंगत पूर्वज मात्र खाने-पीने से संतुष्ट और सुखी हो जाने वाले हैं।भूख देह को लगती है,आत्मा को यह आहार नहीं चाहिए। मृतक पूर्वजों को भोजन पहुँचाने ( जिसकी उन्हें आवश्यकता ही नहीं) से अधिक बढ़कर आवश्यक है कि भूखों को भोजन मिले,अपने जीवित माता पिता व बुजुर्गों को आदर सम्मान से हमारे घरों में स्थान,प्रतिष्ठा व अपनापन मिले,उन्हें कभी कोई दुख सन्ताप हमारे कारण न हो।उनके आशीवार्दों के हम सदा भागी बनें और उनकी सेवा में सुख पाएँ।किसी दिन वृद्धाश्रम में जाकर उन सबको आदर सत्कार पूर्वक अपने हाथ से भोजन करवा उनके साथ समय बिताकर देखिएक्क कितने आशीष मिलेंगे। परिवार के वरिष्ठों व अपने माता-पिता आदि की सेवा सम्मान में जरा-सा जुट कर देखिए,कैसे घर पर सुख सौभाग्य बरसता है।

मुख्य अतिथि आर्य नेत्री शशि कांता कस्तूरिया व अध्यक्ष पूजा सलूजा,अनिता रेलन ,सुधीर बंसल,विमल चड्डा (नैरोबी) ने अपने विचार रखे।कार्यक्रम का कुशल संचालन परिषद अध्यक्ष ने किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, रचना वर्मा, ललिता धवन,आशा आर्य, सुनीता आहूजा, कृष्णा पाहुजा, रविन्द्र गुप्ता आदि ने भजन सुनाए।

## वैवाहिक विज्ञापन

### वर चाहिए

सुंदर, सुशील, गृह कार्य मे दक्ष संस्कारित कन्या, कद 5ft. रंग-Fair जन्म-19/02/1991, शिक्षा- M.Com, PG Diploma in Accountancy (with computerized accounts &taxation ), लखनऊ मे कार्यरत के लिए समकक्ष, संस्कारित युवक चाहिए। लखनऊ वासी को प्राथमिकता। सम्पर्क- 9975109603, 9984602766, 8318651664

**********************

लड़की जन्म 08-04-1988 ऊँचााई, 5'3'' रंग-गोरा श्याम वर्ण, शिक्षा एम.ए. (इंग्लिश) बी.एड. वर्तमान में चन्दा देवी इण्टर कालेज आगरा प्राइवेट स्कूल में पीजटी। मूल निवासी आगरा। गोत्र : कश्यप ब्राह्मण, सौम्य सुशील। सम्पर्क सूत्र : एस.पी. चटर्जी, प्लाट नं0 89, पुष्पांजलि, लक्ष्मी पैलेस, फेज-प्रथम, देवरी रोड बुंदू कत्र आगरा-282001
मो0 9149374841

### वधू चाहिए

❐ उत्तर प्रदेश के जनपद बदायूँ निवासी प्रतिष्ठित आर्य परिवार के 27 वर्षीय युवक लम्बाई 57 योग्यता बी.एस सी., बी.एड. अच्छी आय , शुद्ध शाकाहारी, संस्कारवान कायस्थ वर्णस्थ युवक हेतु सुशिक्षित, सुन्दर, योग्य, गृहकार्य में दक्ष, संस्कारवान, सुसंस्कृत आर्य परिवार की कन्या चाहिए । आर्य समाजी होने पर जाति बंधन नहीं ।
**संपर्क सूत्र : 9997386782**

**********************

❐ लखनऊ निवासी प्रतिष्ठित संस्कारवान परिवार के तलाकशुदा 49 वर्षीय युवक, लंबाई 5 3 , शैक्षिक योग्यता बी.ए., एम.ए., अच्छी आय, शुद्ध शाकाहारी , कान्यकुब्ज ब्राह्मण हेतु सुंदर, सुशील, सुयोग्य, सुशिक्षित तथा गृह कार्य में दक्ष अविवाहित, विधवा अथवा तलाकशुदा वधु चाहिए। संपर्क सूत्र : 8755701393

### वधू चाहिए

❐ बरोग व्यू हॉस्पिटल रोड, सोलन (हिमाचल प्रदेश) निवासी सम्मानित ऑटोमोबाइल्स, मेडिकल, व प्ले स्कूल आदि व्यवसायों से सुसम्पन्न गोयल (वैश्य) परिवार के सदस्य, (मामा जी गुरुग्राम हरियाणा से विधायक), निजी प्रतिष्ठित व्यवसायिक संस्थान के स्वामी, 31 वर्षीय युवक, लंबाई 5 8 , शैक्षिक योग्यता बी.बी.ए., एम.बी.ए., शुद्ध शाकाहारी, संस्कारवान हेतु सुंदर, सुशील, सुयोग्य एवम् सुशिक्षित वधु चाहिए। दहेज व जाति बंधन नहीं।
**-संपर्क सूत्र : 8360658863, 9816852002**

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. बीना 'आर्या'
साहित्य सम्पादक
बृजेन्द्र सिंह 'वत्स'
सह सम्पादक :
पं. चन्द्रपाल 'यात्री' डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान
टंकण - विकास अग्रवाल/इशरत अली
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य
मो0 9412139333

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) द्वारा आर्यावर्त प्रिन्टर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0 प्र0) से मुद्रित व कार्यालय आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ0 प्र0) से प्रकाशित एवं प्रसारित। सम्पादक- डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी, मो0- 9412139333
E-mail : aryawartkesari@gmail.com